IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तनः एक अध्ययन

Dr. Aayushi Sharma

भूमिका

परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। परिवार में ही व्यक्ति को नैतिकता, संस्कार, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिकता की शिक्षा मिलती है। इन शिक्षाओं का संचरण पारिवारिक मूल्यों के रूप में होता है। भारत में सदियों से संयुक्त परिवार व्यवस्था और पारंपरिक संस्कारों ने पारिवारिक मूल्यों को जीवित रखा है। परंतु बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवेश में ये मूल्य तेजी से बदल रहे हैं। इस शोध का उद्देश्य इन परिवर्तनों का अध्ययन करना है।

भारतीय समाज की आधारभूत इकाई परिवार है। यह न केवल व्यक्ति के सामाजिकरण ;वबपंसप्रंजपवदद्ध की प्रथम संस्था है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और हस्तांतरण का माध्यम भी है। परिवारिक मूल्य समाज की उन मान्यताओं, परंपराओं और नैतिकताओं का समुच्चय हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी प्रचलित रहती हैं। परंतु वर्तमान वैश्वीकरण, शहरीकरण, औद्योगीकरण और तकनीकी प्रगति के युग में परिवारिक मूल्यों में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इस शोध पत्र में परिवारिक मूल्यों में हो रहे इन परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

शोध की आवश्यकता

आज पारिवारिक संरचना और जीवनशैली में व्यापक परिवर्तन हो रहा है। संयुक्त परिवारों का विघटन, वृद्धाश्रमों का बढ़ना, विवाह(संस्कारों में परिवर्तन, और युवाओं में व्यक्तिवाद की प्रवृत्तिकृये सभी संकेत करते हैं कि पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन आ रहा है। इन परिवर्तनों का विश्लेषण और मूल्यांकन समाज के विकास के लिए आवश्यक है।

- **उद्देश्य**

1. पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों की पहचान करना।
2. आधुनिक युग में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3. इन परिवर्तनों के कारणों का विश्लेषण करना।
4. पारिवारिक और सामाजिक जीवन पर इनके प्रभावों का मूल्यांकन करना।

- **शोध की पद्धति**

यह शोध वर्णनात्मक समीक्षात्मक है। इसमें पुस्तकों, शोध(पत्रों, समाचार(पत्रों और डिजिटल स्रोतों की समीक्षा की गई है।

साहित्य समीक्षा

- पारिवारिक मूल्य समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण विषय है और इस पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है।
- डॉ। गोविंद अग्रवाल ने अपने शोध में कहा कि पारिवारिक मूल्य पीढ़ियों के बीच सेतु का कार्य करते हैं।
- एम।एन। श्रीनिवास के अनुसार शहरीकरण और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से पारंपरिक मूल्य क्षीण हो रहे हैं।
- डॉ। उषा शर्मा ने अपने अध्ययन में कहा कि महिला सशक्तिकरण और शिक्षा का प्रसार पारिवारिक मूल्यों के रूपांतरण में निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं।
- विभिन्न सामाजिक रिपोर्टों और जनगणना आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि संयुक्त परिवारों की संख्या घट रही है और एकल परिवारों में वृद्धि हो रही है।

➢ **परिवारिक मूल्य अर्थ और परिभाषा**

परिवारिक मूल्य उन नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों का समूह हैं, जिनका पालन परिवार की इकाई करती है। ये मूल्य परिवार के प्रत्येक सदस्य के व्यवहार, दायित्व और अधिकार को परिभाषित करते हैं।

परिभाषाएँः–

- मैकाइवर और पेज के अनुसार, ूपरिवार वह प्राथमिक समूह है जो व्यक्ति को जीवन की पहली शिक्षा प्रदान करता है। परिवारिक मूल्य इस शिक्षा का नैतिक और सांस्कृतिक पक्ष हैं।
- ग्रीन के अनुसार, ूपरिवारिक मूल्य वे परंपराएं, विश्वास और व्यवहार हैं, जो परिवार की एकता, सम्मान और दायित्व को बनाए रखते हैं।
- भारतीय समाज में पारंपरिक परिवारिक मूल्य
- भारतीय समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था रही है,

➢ **जिसमें निम्नलिखित मूल्यों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था।**

- बड़ों का आदर और उनकी आज्ञा का पालन।
- पारिवारिक एकता और सामूहिक निर्णय।
- आर्थिक सहयोग और साझा संपत्ति।
- त्याग और बलिदान की भावना।
- धार्मिकता और आध्यात्मिकता।
- नारी की मर्यादा और पुरुष का उत्तरदायित्व।
- परिवारिक मूल्यों में परिवर्तन के कारक

समाजशास्त्रियों ने परिवारिक मूल्यों में परिवर्तन के पीछे कई कारणों की पहचान को है। प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं

➢ **औद्योगीकरण और शहरीकरण**

औद्योगीकरण ने रोजगार के नए अवसर शहरों में प्रदान किए। ग्रामीण संयुक्त परिवार प्रणाली के स्थान पर नगरीय एकल परिवार की स्थापना हुई। इससे पारंपरिक मूल्य जैसे बड़ों का नियंत्रण और सामूहिक निर्णय कमजोर पड़े।

➢ **विश्लेषण**

- **शिक्षा का प्रसार**

शिक्षा के प्रसार से व्यक्ति में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना का विकास हुआ। स्त्रियों की शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन ने परिवार की परंपरागत पितृसत्तात्मक संरचना को चुनौती दी।

- महिलाओं की स्थिति में बदलाव

आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा के चलते महिलाओं ने निर्णय(निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेना प्रारंभ किया। विवाह, संतानोत्पत्ति और पारिवारिक भूमिकाओं के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया।

- वैश्वीकरण और पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

वैश्वीकरण के कारण उपभोक्तावाद, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भौतिकतावाद की प्रवृत्तियां बढ़ीं, जिससे सामूहिकता पर आधारित पारिवारिक मूल्य कमजोर हुए।

- तकनीकी विकास
- इंटरनेट, मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने पारिवारिक संचार के तरीकों को बदला। पारंपरिक पारिवारिक आयोजनों का महत्व घटा और आभासी संबंधों ने वास्तविक संबंधों को चुनौती दी।
- परिवारिक मूल्यों में दृष्टिगोचर परिवर्तन
- संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर रुझान
- आज शहरी क्षेत्रों में एकल परिवार प्रचलन में हैं। युवा पीढ़ी अपनी स्वतंत्रता और निजता को अधिक महत्व देती है।
- पारिवारिक अनुशासन में कमी
- पारंपरिक बड़ों का अनुशासन और अधिकार सीमित हुआ है। युवा अपने निर्णय स्वयं लेने लगे हैं।
- धार्मिकता और आध्यात्मिकता का क्षय
- जहां पहले परिवार के दैनिक जीवन में धर्म का गहरा प्रभाव था, आज व्यस्त जीवनशैली और भौतिकतावाद ने इन मूल्यों को कमजोर किया है।
- स्त्री पुरुष संबंधों में समानता– पारिवारिक संरचना में लैंगिक समानता की अवधारणा को बढ़ावा मिला है। नारी अब केवल गृहिणी की भूमिका में नहीं बल्कि परिवार की निर्णय(निर्माता भी बन रही है।
- नैतिकता और दायित्व बोध में परिवर्तन
- पारंपरिक त्याग और बलिदान की भावना के स्थान पर व्यक्तिगत हित सर्वोपरि हो गया है।

- समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण
- विभिन्न समाजशास्त्रियों ने परिवारिक मूल्यों में परिवर्तन की व्याख्या अपने(अपने दृष्टिकोण से की है।
- संरचनात्मक कार्यात्मक दृष्टिकोण
- पार्सन्स के अनुसार, औद्योगिक समाज में परिवार की भूमिका विशेषीकृत हो जाती है। परिवार अब मुख्यतः सामाजिककरण और भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करने वाली इकाई बन कर रह गया है।
- पारंपरिक पारिवारिक मूल्य
- संयुक्त परिवार व्यवस्था
- बड़ों का आदर, अनुशासन
- परंपराओं व संस्कारों का पालन
- सामूहिक निर्णय, त्याग, सामंजस्य
- व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता की प्राथमिकता
- विवाह व संस्कारों में सरलता और व्यावहारिकता
- बुजुर्गों की उपेक्षा और वृद्धाश्रमों का चलन
- डिजिटल युग में संवाद की कमी और भावनात्मक दूरी

➢ **कारण**

- शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता
- वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद
- महिला सशक्तिकरण
- आधुनिक संचार माध्यमों का प्रभाव

➢ **प्रभाव**

- सकारात्मक प्रभाव
- व्यक्ति की स्वतंत्रता और व्यक्तित्व विकास
- लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण
- तर्कसंगत दृष्टिकोण का विकास
- नकारात्मक प्रभाव
- परिवारों में भावनात्मक दूरी
- बुजुर्गों की उपेक्षा
- बच्चों में अनुशासन और संस्कारों में कमी।

➢ निष्कर्ष

पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन समय की मांग और सामाजिक विकास की प्रक्रिया का हिस्सा है। जहां इस परिवर्तन ने व्यक्ति को स्वतंत्रता, समानता और विकास के नए अवसर दिए हैं, वहीं इससे पारिवारिक एकता, परंपराओं और नैतिक मूल्यों में क्षरण भी हुआ है। अतः आवश्यकता है कि हम परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाए रखें ताकि पारिवारिक मूल्यों की स्वस्थ परंपरा कायम रह सके।

परिवारिक मूल्य किसी भी समाज की रीढ़ होते हैं। समय और परिस्थिति के अनुसार इन मूल्यों में परिवर्तन स्वाभाविक है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है जो समाज की गतिशीलता को दर्शाता है। आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिकता के साथ चलते हुए हम उन मूल्यों को संरक्षित रखें जो परिवार और समाज की एकता एवं मजबूती का आधार हैं।

➢ सुझाव

- विद्यालयों और परिवारों में नैतिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाए।
- नई पीढ़ी को पारिवारिक मूल्यों से जोड़ने के लिए संवाद बढ़ाया जाए।
- बुजुर्गों की भूमिका को परिवार में सम्मानजनक बनाया जाए।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग पारिवारिक एकता बढ़ाने में किया जाए

➢ संदर्भ ग्रंथ सूची

- अग्रवाल, गोविंद (2002)भारतीय समाज और परिवार. नई दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- श्रीनिवास, एम।एन। (1962)ैवबपंस बिंदहम प्द डवकमतद प्द प्दकपंण न्दपअमतेपजल व िब्ंसपवितदपं च्तमेण
- शर्मा, उषा (2010) भारत में पारिवारिक संरचना और मूल्यों का परिवर्तन. जयपुर राजस्थानी ग्रंथागार।
- Census Of India Reports (2011,2021)
- विभिन्न समाजशास्त्रीय पत्र(पत्रिकाएँ और ऑनलाइन शोध पत्र